शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

यौन नैतिकता के उभरते प्रतिमानः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ0 अपर्णा जोशी*, डॉ0 गिरीश चन्द्र पाण्डेय**

**एसो0 प्रोफे0, समाजशास्त्र विभाग, जी0डी0एच0जी0 कालेज, मुरादाबाद*

***एसो0 प्रोफे0, के0जी0के0 कालेज, मुरादाबाद*

सारांश

वैश्वीकरण तथा आर्थिक उदारवाद के परिणामस्वरुप उत्पन्न हुए आर्थिक परिर्वतनों के साथ साथ भारतीय समाज में मूल्यात्मक परिवर्तनों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है । मूल्यात्मक परिवर्तनों की श्रृंखला में यौनिकता की अवधारणा और यौनिक मूल्यों में आये परिवर्तन सम्मिलित है। नारीवादी साहित्य के विमर्श के केन्द्र में नारी यौनिकता पर पुरुषवादी नियन्त्रण रहा है किन्तु वर्तमान में यौनिकता के अर्थ से जुडी सोच और विचारधारा पर भी अकादमिक जगत में विमर्श प्रारम्भ हुआ है । वर्तमान में मुक्त बाजार ने यौनिकता का प्रयोग उत्पादो के प्रचार, प्रोत्साहन व विक्रय के लिये व्यापक रुप में किया है । विज्ञापन, मीडिया, सिनेमा, साहित्य और सोशल नेटवर्किंग साइट्स नारी और पुरुष देह का वस्तुकरण कर इस मूल्य परिवर्तन में प्रभावी भूमिका में है। जिसके परिणामस्वरुप पारम्परिक यौन नैतिकता के मूल्य निरन्तर शिथिल और विखंडित हो रहे हैं।

संकेत शब्दः *यौन नैतिकता, यौनिक उदारवाद, दृश्य उपभोग, देह, मीडिया, वस्तुकरण, वैश्वीकरण।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 अपर्णा जोशी, डॉ0 गिरीश चन्द्र पाण्डेय, *''यौन नैतिकता के उभरते प्रतिमानः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण'*

शोध मंथन,

सितम्बर 2017,

पेज सं0 13–17

http://anubooks.com/?page_id=581

Artcile No.3(SM 441)

वैश्वीकरण को भारत मे उदारवाद अर्थव्यवस्था मे आए खुलेपन, अर्न्तराष्ट्रीय बाजार से जुड़ाव तथा राज्य के नियन्त्रण मे शिथिलता के संदर्भ मे देखा जाता हैं लेकिन इसमे यौनिकता के वैश्वीकरण और उदारीकरण का भी कुछ ठोस बोध सम्मिलित हैं। इसके परिणामस्वरुप महानगरीय एवं नगरीय क्षेत्रो में यौन नैतिकता के प्रति उदार व लचीली प्रवृत्ति के प्रमाण व साक्ष्य मिल रहे हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के उपरान्त आए अध्ययनों (कक्कर,एस.1990; नाग,एम, 1996, सेन एस. आर. विश्वास तथा धवन, 2011) से ऐसे रुझान मिलने है कि यौनिकता एवं यौन सम्बन्धो के प्रति युवाओ की अभिवृति अब परम्परागत, रुढिवादी एवं दकियानूसी नही रही हैं, जैसा की अब तक विश्वास किया जाता रहा है। यौन व्यवहारों पर किये गये अध्ययनो की संख्या यद्यपि कम है किन्तु ये सीमित अध्ययन संकेत कर रहे हैं कि विवाहित पुरुषों में विवाहेत्तर सम्बन्धों की घटनाऍ तथा अविवाहित युवाओ में विवाह पूर्व यौन सम्बन्धों की घटनाऍ दुर्लभ या विरल नही है (नाग, एम01996, अब्राहम लीना 2004)।

यौनिक उदारवाद को प्राप्त हुए प्रोत्साहन को आर्थिक उदारवाद तथा वैश्वीकरण के प्रभावों के सन्दर्भ में विश्लेषित किया जा सकता हैं (मेरी ई0जॉन तथा जे0नायर 2000)। इन आर्थिक प्रक्रियाओं का सांस्कृतिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। विश्वव्यापी टेलीविजन चैनल, उपभोक्ता उत्पाद, कामोद्दीपक साहित्य तथा फिल्मों के अभूतपूर्व विस्तार ने इनकी उपलब्धता को पहले से कही अधिक सरल और व्यापक बना दिया है। नवीन सांस्कृतिक और भौतिक उत्पादो ने सार्वजनिक जीवन में यौनिकता को नवीन मूल्यों और अर्थों के साथ अलग आयामो मे प्रस्तुत किया हैं। वर्तमान मे यौनिकता न केवल इन उपभोग के उत्पादो की केन्द्रीय विशयवस्तु बन चुकी है अपितु इन उत्पादो के प्रचार, प्रोत्साहन और विक्रय के लिए तीव्रता से प्रयोग की जा रही हैं। एक सफल रणनीति के तौर पर नवीन आवष्यकताओ का आविश्कार करने के लिए भी बाजार इसका प्रयोग कुषलतापुर्वक कर रहा हैं। अपनी आवष्यकता के अनुरुप नवीव बिशयवस्तु और प्रस्तुतीकरण को भी तीव्रता से प्रिटं तथा दष्य मीडिया मे स्थान और अभिव्यक्ति मिल रही है। न केवल नारी देह अपितु पुरुष देह का वस्तुकरण (कान्ट, आई0 1995; नुसबाम, एम0 1995) किया जा रहा हैं। इमेन्यूेल कान्ट के अनुसार केवल यौनिक सन्तुष्टि के लिए किसी व्यक्ति (नारी अथवा पुरुष) को देखना या अनुभव करना ही वस्तुकरण कहलाता हैं (पापाड की 2007)। अतोषणीय और अतृप्त सुख, इच्छा और उपभोग की खोज तथा एक से अधिक यौन सम्बन्धों, विवाहपूर्व तथा विवाहेत्तर सम्बघो की अभिव्यक्ति भी व्यापक रुप से सिनेमा, टी0वी0, साहित्य तथा विज्ञापनो में दृष्टिगोचर हो रही हैं। ''संचार, मीडिया, विज्ञापन की सहायता से जन सामान्य को मनोवैज्ञानिक रुप से उपभोक्तावाद का अनुपालन करने के लिए अभ्यस्त बना देता है (मलिक एस0 2014)। इस प्रकार यौनिकता पहचान, धारणा, प्रतीक तथा सफलता का महत्वपूर्ण चिन्हक बन चुकी है इसी के साथ देह आधुनिकता की अभिव्यक्ति, अनुभूति, प्राप्ति तथा साधन के रुप मे स्वीकृति प्राप्त कर रही है जो अपनी इच्छाओं के लिए विवाह संस्था से स्वतन्त्र होती दिखायी देती हैं। क्योकि ऐसा इन सभी विधाओं में भी प्रतिबिबिंत हो रहा है। इसी के अनेक प्रभावों को युवा पीढी में आये परिवर्तनों में भी देखा जा सकता है। जिन्हें पहले से कही अधिक

प्रतिस्पर्धा का सामना न केवल व्यावसायिक सफलता पाने अपितु स्वयं को स्पर्धा में बनाये रखने के लिए करना पड़ता है। वही परिवर्तन युवाओं में व्यक्तिवादिता तथा पृथकत्व की भावना में आयी वृद्धि के रुप में भी देखा जा सकता है जहां वे स्वयं को समाज की एक इकाई और प्रतिबिम्ब के रुप में नही देखते अपितु स्वयं के एक पृथक अस्तित्व के तौर पर अपना दावा प्रस्तुत कर रहे है (मेरी ई0 जॉन तथा जे0नायर 2000)।

वर्तमान संदर्भ में अन्य सामाजिक परिवर्तनो के साथ यौन नैतिकता और यौन मूल्यों में आये बदलावों का सामयिक समाजशास्त्रीय विश्लेषण आवश्यक हो गया है। इस मूल्यात्मक परिवर्तन में वैश्वीकरण, उदार बाजारवाद के साथ मीडिया, विज्ञापन, सिनेमा, साहित्य तथा सामाजिक नेटवर्किगं साइटस के प्रभावो की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है। मूल्य निर्माण की मुख्य भूमिका में रहने वाले परिवार और समाज आज केन्द्र में न होकर इन सभी के साथ एक अशंदाता की भूमिका में है। नवीन यौन नैतिकता, विवाह और यौन सम्बन्धों को आवश्यक रुप से एक दूसरे के संदर्भ में नही देखती, वही कानून भी लिव इन सम्बन्धों को वैधानिकता देखर यह प्रमाणित कर चुका है कि भारतीय समाज में विवाह और यौन संबन्धो को वैधानिक रुप से एक संदर्भ देने से प्रयाण हो चुका है। अतः विवाहपूर्व सम्बन्धों को अकरणीय मानने का वैधानिक आघार समाप्त होने से इससे जुड़ी सामाजिक स्वीकृतिंया निरन्तर शिथिल होती गयी हैं। अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरुप में संचार व आवागमन के सक्षम साधनो ने परिवार के सदस्यों के बीच भौगोलिक दूरी बढ़ाने के साथ उसके नियन्त्रण को कम किया है। जीवन के आदर्शात्मक मूल्यों और उद्वेश्यों में आये परिवर्तन ने भौतिक सफलता, उच्च शिक्षा तथा करियर को सर्वोच्च प्राथमिकता में पहुँचा दिया हैं जहां सामाजिक और मानवीय मूल्य भी नेपथ्य में चले गये है। इसी क्रम में विवाह के उद्वेश्यों का आदर्शात्मक आधार धर्म, प्रजा, रति आज प्रतिवर्तित क्रम में आ गये है लेकिन इसके लिये मात्र युवा पीढ़ी ही उत्तरदायी नही है। उनका पालन पोषण तथा सामाजीकरण जिस सामाजिक वातावरण में हो रहा है उसकी भूमिका को नकारा नही जा सकता । वर्तमान में यौन सुख (रति) विवाह से स्वतन्त्र रूप में अस्तित्व ले चुका है जिसे प्रथम नही तो सर्वाधिक महत्वपूर्णों की श्रेणी में स्थान प्राप्त है। अन्य भौतिक लक्ष्यों की प्राथमिकता ने वैवाहिक तथा अन्य सामाजिक सम्बन्धों में प्रतिबद्धता तथा जवाबदेही से निरन्तर दूरी उत्पन्न की है। परिवर्तित प्राथमिकताओं के कारण विवाह तथा ऊर्जा का अभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर है वही नवीन यौनिक नैतिकता तथा मूल्यों के परिणाम स्वरुप विवाह तथा सन्तानोत्पत्ति का सीधा सम्बन्ध स्थापित करना कठिन होता जा रहा है पुराने मूल्यों के अनुरुप यौन और विवाह से जुड़े निषेध और पातकों का प्रभाव शिथिल हुआ है। वही विवाह पूर्व और विवाहेत्तर सम्बन्धों से जुड़े निषेध भी प्रभावी नही रहे है। सन्तानोत्पत्ति को आज जीवन की चरमसन्तुष्टि या परितोष के रूप में न देखकर एक जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व या भार समझा जाने लगा है जिसे वर्तमान पीढ़ी जीवन के विभिन्न विकल्पों में से एक मानती है । करियर के सोपान क्रम मे आरोहण के समय बच्चो के जन्म तथा पालन पोषण मे व्यय होने वाले समय तथा ऊर्जा को नकारात्मक भूमिका के रुप मे विश्लेषित किया जाने लगा

है । इसी कारण दत्तक ग्रहण को एक श्रेष्ठ विकल्प के रुप में मान्यता और स्वीकृति मिल रही है वही इच्छित संतानहीनता को भी सामाजिक स्वीकृति मिल रही है किन्तु इसके प्रभावो का विश्लेषण होना अभी शेष है ।

उपरोक्त सभी परिवर्तनों में सिनेमा, विज्ञापन, टी0 वी0 धारावाहिक, इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री कि साथ डेटिंग साइटस भी महत्वपूर्ण भूमिका में है जिनके द्वारा दृश्यउपभोग विचार धारा को वैश्वीकरण के उपरांत जो उभार मिला तथा जिसने आर्थिक उदारीकरण के साथ साथ यौनिकता की अवधारणा को भी रुपांतरित करने मे योगदान किया है । नवीन परिवेश में नारी को ईच्छा व लालसा की निष्क्रिय वस्तु के स्थान पर सक्रिय, सहयोगी, प्रतिसंवेदी तथा कभी–कभी आक्रामक भूमिका में भी प्रस्तुत किया जा रहा है (मेरी ई0जॉन तथा जे.नायर 2000)। इस चित्रण से जुड़ा एक बड़ा बाजार है जो इस चित्रण से ही मुनाफा कमा रहा है। स्त्री, नायिका या हीरोईन की इस यात्रा को इन सभी विधाओं में देखा जा सकता है। सिनेमा और विज्ञापन मे नारी की भूमिका का रुपांतरण पतिव्रता, घरेलू महिला से कामकाजी, आत्मनिर्भर, स्वाग्रही तथा मोहक छवि में देखा जा सकता है। विभिन्न फिल्मों मे यह यात्रा 'रोजा', 'बोम्बे' से चलकर 'पिंक' व 'लिपस्टिक अंडर माई बुर्का' तथा 'शुभ मंगल सावधान' तक पहुँच चुकी है जहॉ यौनिकता की अवधारणा को विवाह संस्था के अन्तर्गत ही नही इसके दायरे से बाहर भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत किया गया है। ये समाज के दोहरे मानदण्डो पर प्रहार करने का प्रयास करती दिखती है। इसमें वैश्वीकरण और आर्थिक उदारवाद से उपजे बाजारवाद का प्रभाव तो है ही वही 16 दिसम्बर की घटना के उपरान्त आयी सामाजिक जागरुकता तथा वर्मा कमेटी की अनुशंसाओ के परिणामस्वरुप आये सकारात्मक परिवर्तनो का भी स्पष्ट संकेत मिलता है।

समकालीन भारतीय समाज के वैश्वीकरण व उदार बाजारवाद ने यौनिकता व यौन नैतिकता के स्थापित मानदण्दो को शिथिल किया है, इसके साथ–साथ वर्तमान भारतीय समाज मे मीडिया, विज्ञापन, सिनेमा, कानूनी संशोधनों तथा सामाजिक नेटवर्किंग साइटस ने भी यौन नैतिकता के नये प्रतिमानों यथा लिव इन सम्बन्धों, विवाहपूर्व सम्बन्धों तथा आकास्मिक यौन सम्बन्धो में पारम्परिक यौन शुचिता, कौमार्यत्व तथा विवाह उद्देश्यों के क्रम धर्म, प्रजा, रति की धारणाओ को विखंडित किया है । यौन नैतिकता के इन नये प्रतिमानो के उभार, स्थापन और पुर्नबलन में नारीवादी आंदोलन, वैधानिक संशोधनों तथा हस्तक्षेप की भूमिका को रेखांकित करना आवश्यक है क्योंकि इनकी प्रभावी उपस्थिति के अभाव में पितृसतात्मक मूल्यों की पकड़ का शिथिलिकरण असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था ।

संदर्भ सूची ;

1. Abraham, L.(2004) Redrawing the Laxman Rekeha : gender differences and cultural construction in youth sexuality in urban India, pages 209-241 in S. Srivastava, (ed.) Sexual Sites Seminal Attitudes: Sexualities, masculinities and culture in south Asia . N Delhi : sage

2. Kakar s. (1990) intimate Relations. Chicago: univ. of Chicago press

3. Kant I. (1963), Lectures an ethics Louis Infield (tr.) N York: Harper and Row .

4. Mary E. john (2000) Globalization, sexuality and the visual field : Issues and non issues for cultural critique in Mary E. john and J. Nair (Ed), A question of silence ? The sexual Economics of modern India, N Delhi : Kali for women.

5. Malik,S. (2014) Women's objectification by consumer culture International Journal of Gender & Women studies. Dec Vol.2, No 4, 87-102.

6. Nag, M. (1996), Sexual Behavior & AIDS in India. N Delhi : Vikas Pub. House.

7. Naussbaum, M. (1995), Objectification. Philosophy and public affairs. Vol 24, Issue 4 page 275. Jstor.

8.Papadaki, E, Contemporary Polit Theory (2007) 6: 330.https://doi.org/10.1057/palgrave.cpt.9300282

9.Sen, S,R Biswas and N. Dhawan (2011), Intimate others: Marraiage and Sexualities in India, Kolkata:Stree